अंक 33

वर्ष-9वां

जनवरी-मार्च 2015

धार्मिक बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

नववर्ष के कैलेण्डर के साथ

संपादक - विराग शास्त्री, जबलपुर

प्रकाशक - सूरज बेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुंबई

संस्थापक - आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर (म.प्र.)

खाने के शौकीन ध्यान दें !

ब्रेड में चूहा - हम इस पत्रिका के माध्यम से निरन्तर बाजार की वस्तुओं से आपको सावधान करते रहे हैं। कुछ दिन पूर्व ही एक व्यक्ति ने जब सुबह नाश्ता के लिये ब्रेड का पैकेट खोला तो ब्रेड में एक मरा चूहा चिपका हुआ मिला।

क्या आप भी ब्रेड के शौकीन हैं .....

बंद पैकेट में छिपकली -

बाजार के नमकीन आदि के पैंकिग तो सुन्दर होती है परन्तु सामग्री बनाने वालों को आपकी जान की कोई परवाह नहीं है।

चहकती चेतना के एक पाठक ने यह फोटो भेजा है जिसमें बाजार के नमकीन के पैकेट में मरी हुई हुई छिपकली साफ दिखाई दे रही है।

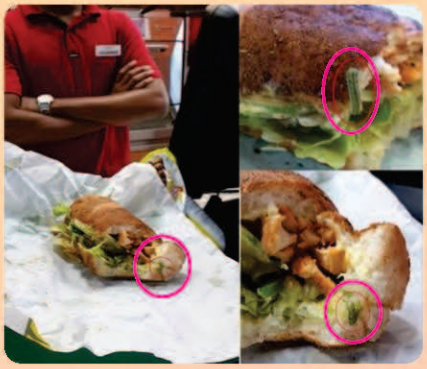

क्या आप भी पिज्जा खाते हैं देखिये पिज्जा के साथ जिन्दा इल्ली....

हर वस्तु अच्छी तरह देखकर खायें। देखिये नींबू में उसी रंग की इल्ली

क्या अब भी आप ये वस्तुयें बिना संकोच खायेंगे.....

आध्यात्मिक, तात्विक,धार्मिक एवं नैतिक
बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

JULY - SEPT. 2014

प्रकाशक
श्रीमति सूरजबेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुम्बई

संस्थापक
आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाऊन्डेशन, जबलपुर म.प्र.

संपादक
विराग शास्त्री, जबलपुर

प्रबंध संपादक
स्वस्ति विराग जैन, जबलपुर

डिजाइन/ ग्राफिक्स
गुरूदेव ग्राफिक्स, जबलपुर

परमसंरक्षक
श्री अनंतराय ए.सेठ, मुम्बई
श्री प्रेमचंदजी बजाज, कोटा
श्रीमती आरती जैन, विले पार्ले, मुम्बई
श्री जैन बहादुर जैन, कानपुर

संरक्षक
श्री आलोक जैन, कानपुर
श्री सुनीलभाई. जे. शाह, भायंदर, मुम्बई

मुद्रण व्यवस्था
स्वस्ति कम्प्यूटर्स, जबलपुर

प्रकाशकीय व संपादकीय कार्यालय
"चहकती चेतना"
सर्वोदय, 702, जैन टेलीकॉम,
फूटाताल, लाल स्कूल के पास, जबलपुर म.प्र. 482002
9300642434, 09373294684
chehaktichetna@yahoo.com

चहकती चेतना के पूर्व प्रकाशित संपूर्ण अंक प्राप्त करने के लिये लॉग ऑन करें

www.vitragvani.com

क्र.	विषय	पेज
1.	सूची	1
2.	संपादकीय	2
3.	तीर्थक्षेत्र - पौन्नूर	3
4.	प्रेरणादायक व्यक्तित्व	4
5.	जिनभक्ति	5-6
6.	बलभद्र	7
7.	सफल जीवन का रहस्य	8
8.	जिनदर्शन का परिणाम	9-10
9.	जैन धर्म का गौरवशाली...	11-12
10.	राष्टीय गीत.....	13
11.	मोबाईल के शौक.....	14
12.	शलाका पुरुष	15-16
13.	जन्म	17-18
14.	विनोबा भावे	19
15.	प्रेरक प्रसंग	20
16.	आधुनिक दोहे	21
17.	कहानी	22-23
18.	पहचान बताओ	24
19.	कमाल की विशुद्धि	25
20.	छहढाला शिविर	26-27
21.	कुरकुरे में मांस/हार्लिक्स....	28
22.	कवितायें	29
23.	बाल गीत	30
24.	जन्मदिवस	31
25.	करम का लेख	32

सदस्यता शुल्क - 400 रू. (तीन वर्ष हेतु)
1200 रू. (दस वर्ष हेतु)

सदस्यता राशि अथवा सहयोग राशि आप "चहकती चेतना" के नाम से ड्राफ्ट/चैक/मनीआर्डर से भेज सकते हैं। आप यह राशि कोर बैंकिंग से "चहकती चेतना" के बचत खाते में जमा करके हमें सूचित सकते हैं।
पंजाब नेशनल बैंक, फुहारा चौक, जबलपुर
बचत खाता क्र.- 1937000101030106
IFS CODE : PUBN0193700

संपादकीय

माता-पिता ध्यान दें......

धैर्य खोते बच्चे और अविवेकी युवा : जिम्मेदारी किसकी ?

इंदौर में एक छोटी सी बात पर नाराज होकर एक बालक ने अपनी छोटी सी बहन का गला दबाकर हत्या कर दी और स्वयं फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली, दूसरी घटना में एक 10 वर्षीय बालक ने अपनी बड़ी बहन से साइकिल चलाने के लिये मांगी तो बहन ने मना कर दिया। इस बात से नाराज होकर उस बालक ने आत्महत्या कर ली। तीसरी घटना में एक 20 वर्षीय युवक को उसके पिता ने क्लब में जाने से मना किया तो उसने अपने पिता को ही मार दिया। चौथी घटना में होस्टल में रहते हुये एक 13 वर्षीय बालक को किसी लड़की से प्रेम हो गया। उसने उस लड़की का नाम ब्लेड से अपने हाथ पर लिखा जिसे देखकर उसके टीचर ने उसे डांटा और पढ़ाई में मन लगाने को कहा इस पर नाराज होकर उस बालक ने फांसी लगाकर अपने जीवन का अन्त कर लिया।

मैं उन घटनाओं का उल्लेख कर रहा हूँ जो पिछले तीन माह में समाचार पत्रों में पढ़ने को मिलीं। ऐसी कई घटनायें घट रहीं हैं वे सब लगभग इसी तरह की हैं। आजकल के बच्चे और युवा अपने सुखद भविष्य का असमय ही अन्त कर रहे हैं। जिस आयु में बच्चों और युवाओं को अपने भविष्य की दृष्टि से तैयारी करना चाहिये उस आयु में ये मोबाइल और आधुनिक तकनीकी साधनों के व्यसनी हो गये हैं। बात-बात में जिद करना, किसी इच्छा के पूरे न होने पर घर का सामान उठाकर फेंकना, किसी के कुछ कहने पर धैर्य खोकर गलत कदम उठाना जैसी घटनायें अत्यंत चिन्ता का विषय हैं।

माता-पिता इन घटनाओं के लिये टीवी, मोबाइल, इंटरनेट को जिम्मेदार बताकर स्वयं अपनी जिम्मेदारी से बच रहे हैं। पर माता-पिता ने कभी सोचा कि हम अपने बच्चों के कितने पास हैं? हम उन बच्चों की सुविधाओं और अच्छी शिक्षा के लिये दिन-रात धन कमाने में व्यस्त हैं परन्तु हमें उनकी समस्या समझने का समय नहीं है। क्या माता-पिता जानते हैं कि वे क्या करते हैं, कहाँ जाते हैं, उनकी दिनचर्या क्या है? शायद नहीं। यदि कभी कुछ गलत लगा तो डांटकर या मारकर अपने कर्तव्य को पूरा समझते हैं....। बच्चे भी अपनेकोई खास बात अपने माता-पिता की नाराजगी के डर से नहीं बताते। परन्तु आज के समय में धन से ज्यादा आवश्यक है आपका उनके साथ मित्रवत् व्यवहार। आज के धैर्य खोते बच्चे को प्यार और अनुशासन के संतुलन से ही संभाला जा सकता है। परिवार में इतनी सहजता हो कि बच्चे अपने स्कूल और कॉलेज में होने वाली हर छोटी-बड़ी गतिविधि को बताने में प्रसन्नता का अनुभव करें और आप भी उन्हें ध्यान से सुनकर उन्हें उचित मार्गदर्शन कर सकें। प्रतिस्पर्धा के इस दौर में बच्चे भले ही आगे न जा पायें परन्तु वे योग्य व्यक्ति बनकर अपने जीवन को व्यवस्थित रूप से जी सके तो यही हमारी और उनकी सफलता है।

इसका प्रारंभ आज और अभी से कीजिये, कहीं देर न हो जाये.........

आपका विराग

अहंकारी व्यक्ति बहरा होता है वह किसी की नहीं सुनता।

तीर्थधाम
पोन्नूर

तमिलनाडु के तिरुवन्नैमलै जिले के अन्तर्गत पोन्नूर हिल अत्यंत प्रसिद्ध स्थान है। दिगम्बर जैन धर्म के सर्वाधिक प्रतिष्ठित आचार्यों में से एक आचार्य कुन्दकुन्द ने यहीं के जंगलों में अपनी आत्माराधना की। कहा जाता है कि आचार्य कुन्दकुन्द यहीं से विदेह क्षेत्र गये थे और 8 दिन भगवान सीमंधर भगवान के समवशरण में आठ तक रहे। फिर वहाँ से आकर उन्होंने पंच परमागम की रचना की।

पोन्नूर में एक छोटा पहाड़ है। पहाड़ पर एक लघु जिनमंदिर है। इस जिनमंदिर में भगवान महावीर की मनोहारी पाषाण की पद्मासन प्रतिमा एवं आचार्य कुन्दकुन्द देव के चरण चिन्ह विराजमान हैं। नीचे तलहटी में आचार्य कुन्दकुन्द संस्कृति सेन्टर है। जहाँ भगवान सीमंधर स्वामी का अत्यंत सुन्दर जिनमंदिर है, साथ ही स्वाध्याय भवन एवं धर्मशाला का निर्माण भी किया गया है। पोन्नूर नगर में दो प्राचीन जिनमंदिर भी हैं।

पोन्नूर हिल चेन्नई से 160 किमी, बंगलौर से लगभग 200 किमी की दूरी पर है। पोन्नूर गांव में दो प्राचीन जिनमंदिर भी हैं। पोन्नूर के आसपास अनेक दर्शनीय तीर्थ क्षेत्र हैं। संपर्क सूत्र - 04183225033, 291136

जो बुरा सोचते हैं उनका बुरा अवश्य होता है।

प्रेरणादायक व्यक्तित्व -

गुरुदेवश्री कानजी स्वामी

कानजी स्वामी सौराष्ट्र के प्रसिद्ध आध्यात्मिक संत हुये हैं। ये श्वेताम्बर स्थानकवासी सम्प्रदाय के बड़े साधु थे।इनकी ख्याति और प्रभाव पूरे श्वेताम्बर समाज में अभूतपूर्व था पर काफी अध्ययन के पश्चात् भी इन्हें सही मार्ग नहीं मिला। बाद में दिगम्बर आम्नाय के मूलग्रन्थ समयसार का अध्ययन करने के बाद इन्होंने श्वेताम्बर जैन समाज की प्रसिद्धि, पद छोड़कर दिगम्बर तेरापंथ धर्म अपना लिया। प्रस्तुत हैं उनके जीवन की कुछ प्रेरणादायक घटनायें -

ध्येय - कानजी स्वामी को बचपन में कानू नाम से सम्बोधित किया जाता था। सन् 1956 में कानू अपने बड़े भाई खुशाल भाई क साथ गांव घूमने गये। चर्चा में खुशालभाई ने कहा - मैं बड़ा होकर बड़ा व्यापारी बनूँगा। अपने घर में बहुत गरीबी है उसे दूर करूँगा। खुशाल भाई ने पूछा - कानू! तुम क्या बनोगे ? कानू ने पूरे आत्मविश्वास से कहा - भाई! मैं तो ऐसा काम करूँगा जो किसी ने नहीं किया और यही कानू 'कानजी स्वामी' के नाम से प्रसिद्ध हुआ और दिगम्बर जैन धर्म का अद्‌भुत प्रचार-प्रसार किया।

निर्भीकता- कानू की ईमानदारी के कारण दुकान में ग्राहक बहुत आते थे और उनकी बुआ के लड़के कुंवरजी के दुकान में बैठने के कारण दुकान में बिक्री कम होती थी। कानू ने कुंवरजी भाई से कहा - भाई! अपने को दुकान में तम्बाकू नहीं बेचना नहीं चाहिये। यह नशाकारक पदार्थ है परन्तु कुंवरजी भाई नहीं मानते थे। कानू ने आषाढ़ माह के प्रारंभ होने के पूर्व सारी तम्बाकू कम भाव में बेच दी। कुंवरजी को यह अच्छा नहीं लगा। तम्बाकू का स्टॉक रखने से दो फायदे होते थे। आषाढ़ में ठंडी हवा के कारण उसका वजन बढ़ जाता था और चातुर्मास के बाद उसके दाम भी बढ़ जाते थे।

कुंवरजी की नाराजगी जानकर कानू ने उन्हें स्पष्ट कह दिया कि मैं इस नशाकारक तम्बाकू को दुकान में नहीं बेचूँगा। यदि आपको दुकान में नहीं बिठाना हो तो मत बिठाओ। इतना कहकर वे दुकान छोड़कर जाने लगे तो कुंवरजी ने कानू की बात मानते उन्हें दुकान पर बैठने का निवेदन किया।

संकल्प - 1910 में 20 वर्ष की उम्र में कहान एक विवाह में शामिल होने भावनगर गये। उस समय विवाह में जाने में चार पाँच दिन का समय लग जाता था। शादी के राग-रंग के माहौल में कहान के हृदय में वैराग्य का विचार चल रहा था। अरे रे! यह मनुष्य पर्याय व्यर्थ खोने के लिये नहीं है। उन्होंने वहीं निर्णय कर लिया मैं आजीवन विवाह नहीं करूँगा और ब्रह्मचर्य का संकल्प लेकर वे पॉलेज वापिस आ गये।

आत्मकल्याण न करना अपराध है।

मुनिभक्ति

कच्छ देश के रौरवक नामक नगर में राजा उद्यायन राज्य करते थे। वे जिनधर्म प्रेमी,दानवीर और न्यायप्रिय राजा थे। उनका अधिकांश समय स्वाध्याय चिन्तन और प्रजा की कुशलता में बीतता था। उनकी रानी का नाम प्रभावती थी। रानी भी अपने पति के अनुरूप सदैव जिनधर्म की सेवा और भक्ति आदि कार्यों में लीन रहती थी। राजा-रानी के जिनधर्म के प्रति भक्ति की चर्चा स्वर्ग के इन्द्रों की सभा में भी होती थी।

एक दिन सौधर्म स्वर्ग के इन्द्र ने अपनी सभा में धर्म चर्चा प्रारम्भ करते हुये कहा - हे देवो! संसार में अरिहन्त देव ही सच्चे देव हैं। वे समस्त दोषों से रहित हैं। उनके द्वारा बताया गया वीतरागी धर्म ही संसार के सभी जीवों को जन्म-मरण के भयंकर कष्टों से मुक्ति दिलाने में समर्थ है। इन्द्र ने धर्मचर्चा के बीच में जिनधर्म के प्रति अडिग आस्था रखने वाले राजा उद्दायन की बहुत प्रशंसा की। देवराज इन्द्र के द्वारा मनुष्य गति के राजा की प्रशंसा सुनकर वासव नाम के देव ने राजा उद्दायन की परीक्षा लेने का निर्णय किया। वे उसी क्षण एक कोढ़ी मुनि का वेश बनाकर राजा उद्दायन के उपवन में पहुँच गये। उसके शरीर के प्रत्येक अंग में कोढ़ दिखाई दे रहा था और पूरे शरीर से बहुत दुर्गन्ध फैल रही थी। वेदना के कारण चलते समय पैर भी सही ढंग से नहीं रख पा रहे थे।

राजा को जैसे मुनिराज के आने का समाचार मिला वे तुरन्त आये और उन्होंने रानी के साथ आकर मुनिराज का दर्शन किया। बाद में मुनिराज को नवधा भक्तिपूर्वक पड़गाहन किया। आहार करते समय मुनिराज के वेश में देव ने अपनी विक्रिया से वमन उल्टी करना प्रारंभ कर दिया। वमन की दुर्गन्ध इतनी असहनीय थी कि लोगों का वहाँ खड़ा रहना कठिन हो गया। किन्तु धन्य हैं राजा उद्दायन और उनकी रानी जिन्होंने अत्यंत भक्ति भाव से उनकी वैयावृत्ति की। राजा ने मुनिराज के शरीर से सारा वमन की गन्दगी साफ की। मुनिराज ने राजा के ऊपर भी वमन कर दिया। इसके बाद भी राजा-

अपने सुन्दर शरीर पर घमंड मत करो क्योंकि इसकी कीमत एक कटोरा राख (मिट्टी) है।

रानी ने अत्यंत भक्ति प्रदर्शित की। मुनिराज की ऐसी अवस्था देखकर वे विचार करने लगे कि हमने ही मुनिराज के प्रतिकूल आहार दिया है जिससे मुनिराज को परेशानी हो गई। हम लोग पाप के भागी हैं। हमारे कारण ही मुनिराज को आहार में अन्तराय आ गया। इस प्रकार दोनों अपने प्रमाद की निन्दा करने लगे। इस प्रकार चिन्तवन करते हुये राजा ने उन मुनिराज के शरीर को शुद्ध जल से साफ किया।

उसी समय मुनिराज के वेश में देव ने अपना वास्तविक रूप प्रगट कर लिया और हाथ जोड़कर राजा से कहा - हे राजन् ! मैं वासव नाम का देव हूँ। स्वर्ग में आपके जिनधर्म के प्रति समर्पण की प्रशंसा सुनकर आपकी परीक्षा लेने आया था। आपकी जितनी प्रशंसा की जाये उतनी कम है। इन्द्र ने आपकी जितनी प्रशंसा की वह परम सत्य सिद्ध हुई। आपका निर्विचिकित्सा अंग अद्भुत है।

इस जगत में आपके समान कौन दूसरा है? जो कुष्ठ रोग पीड़ित मुनि की इतनी सेवा करे । इतना कहकर वासव देव वापस स्वर्ग चला गया और राजा पुनः अपनी दैनिक गतिविधियों में तत्पर हो गये।

इस प्रकार वे कई वर्षों तक राज्य करते रहे। एक दिन राजमहल की छत में बैठकर वे आकाश को देख रहे थे। अचानक उनकी दृष्टि बादलों के समूह पर पड़ी। उन्होंने देखा कि हवा के झोंके ने पूरे बादलों के समय को छिन्न-भिन्न कर दिया। यह देखकर राजा उद्दायन विचार करने लगे कि अहो! यह संसार भी क्षणभंगुर है और एक दिन यह राजपाट-शरीर-वैभव सब नष्ट हो जायेगा। उनके हृदय में वैराग्य उत्पन्न हो गया और उन्होंने अपने पुत्र को राजपाट सौंपकर भगवान महावीर के समवशरण में जाकर वीतरागी जिन दीक्षा धारण कर ली। रानी प्रभावती ने भी आर्यिका व्रत ग्रहण कर लिये।

कठोर आत्मसाधना द्वारा मुनि उद्दायन ने समस्त कर्मों का नाश कर मोक्ष महापद की प्राप्ति की। रानी प्रभावती भी आत्मसाधना करते हुये समाधिमरण को प्राप्त हुईं और ब्रह्म स्वर्ग में देव हुईं।

यही राजा उद्दायन सम्यक् दर्शन के आठ अंगों में एक निर्विचिकित्सा में अंग में प्रसिद्ध हुये।

कल्याण के कारणों में सत्समागम और ज्ञानाभ्यास मुख्य हैं।

बलभद्र

शलाका पुरुषों में 9 बलदेव होते हैं। इन्हें बलभद्र, हलधर, राम भी कहा जाता है। बलदेव नारायण के बड़े भाई होते हैं। इन दोनों भाईयों अटूट स्नेह रहता है। बलदेव पूर्व पर्याय तप-साधना के बल पर देव पर्याय प्राप्त करते हैं और वहाँ से आकर बलदेव के रूप में जन्म लेते हैं। ये महान पराक्रमी, अतिसुन्दर और वैभव संपन्न होते हैं। नारायण की मृत्यु के समय छह माह तक भाई के वियोग में अत्यंत दुःखी रहते हैं जैसे लक्ष्मण की मृत्यु के बाद राम दुःखी होकर छः माह तक लक्ष्मण का शव लेकर घूमते रहे। बाद में अनेक निमित्तों के समागम होने पर इन्हें संसार से वैराग्य हो जाता है और मुनि दीक्षा पद लेकर पुरुषार्थ के बल पर मोक्ष पद प्राप्त करते हैं। सभी बलदेव नियम से उर्ध्वगामी होते हैं अर्थात् स्वर्ग या मोक्ष पद प्राप्त करते हैं।

बलदेवों के पाँच रत्न - रत्नमाला हार, लागंल (अपराजित हल), मूसल, स्यन्न (दिव्य गदा) और शक्ति ये सभी शक्तियाँ शत्रु पर विजय प्राप्त कराने वाली होती हैं। इन सभी शक्ति रत्नों की रक्षा एक-एक हजार देव करते हैं।

वर्तमान काल के नव बलदेव

विजयाचला सुधम्मो, सप्पह-णामो, सुदंसणो णंदी।
तह णंदिमित्त- रामा, पउमो णव होंति बलदेवा।। तिलोय पण्णत्ति 524 ।।

(भरत क्षेत्र में) विजय, अचल, सुधर्म,सुप्रभ,सुदर्शन, नन्दि, नन्दिमित्र, राम और बलराम (पद्म) ये नौ बलदेव हुये हैं।

सभी बलदेव समचतुरस्रसंस्थान, वज्रवृषभनाराच सहंनन के धारी शुक्ल वर्ण वाले होते हैं। प्रत्येक बलदेव के 8 हजार रानियाँ, 16 हजार देश, 16 हजार आधीन राजा, नौ हजार आठ सौ पचास द्रोणमुख, 25 हजार पत्तन, 12 हजार बर्वट, 12 हजार मडम्ब, 8 हजार खेटक, 48 करोड़ ग्राम, 28 द्वीप, 42 लाख हाथी, 42 लाख रथ, 9 करोड़ घोड़े, 42 पदाति तथा 8 हजार गणबद्ध देव रहते हैं।

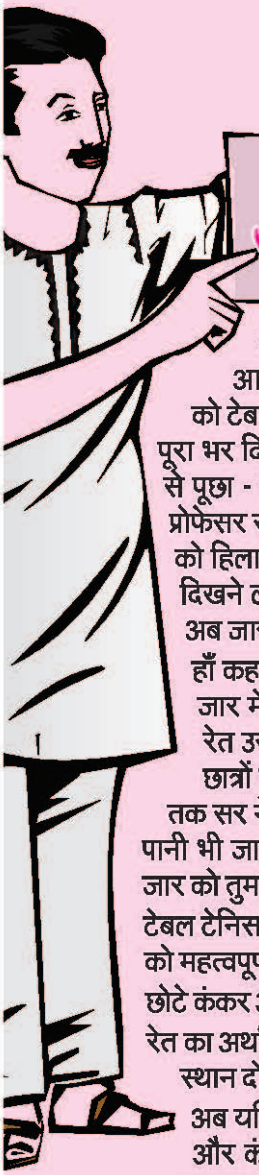

सफल जीवन का रहस्य

दर्शन शास्त्र के प्रोफेसर कक्षा में आये और उन्होंने छात्रों से कहा कि वे आज जीवन का एक महत्वपूर्ण पाठ पढ़ाने वाले हैं। उन्होंने एक काँच के जार को टेबल के ऊपर रखा और उसमें टेनिस की गेंद डालने लगे और जार को गेंद से पूरा भर दिया अब उसमें एक भी गेंद जाने की जगह नहीं थी। .... उन्होंने से छात्रों से पूछा - क्या पूरा जार भर गया है ? छात्रों ने एक स्वर से कहा - हाँ सर। फिर प्रोफेसर साहब उस जार में छोटे - छोटे कंकर भरने लगने फिर धीरे-धीरे उस जारी को हिलाया, जिससे पूरे कंकर व्यवस्थित हो गये और जार में थोड़ी जगह खाली दिखने लगी तो उसमें और कंकर भर दिये। प्रोफेसर साहब ने फिर पूछा कि क्या अब जार पूरी तरह भर गया है ?

हाँ कहकर सभी छात्रों ने अपनी सहमति व्यक्त की। फिर प्रोफेसर साहब ने उस जार में बारीक रेत भरना शुरु कर दिया। उस जार में जितनी संभव थी उतनी रेत उसमें बैठ गई। प्रोफेसर ने फिर पूछा - अब तो जार पूरी तरह भर गया ना छात्रों की कुछ समझ में नहीं आ रहा था। उन्होंने संकोच करते-करते हाँ कहा। तक सर ने पानी की बोतल से दो गिलास पानी निकालकर उस जार में डाल दिया। पानी भी जार में समा गया। इसके बाद प्रोफेसर ने गंभीरता से कहा - इस काँच के जार को तुम अपना जीवन समझो।

टेबल टेनिस की गेंदों ने सबसे बड़ा हिस्सा लिया अर्थात् अपने धर्म, परिवार, स्वास्थ्य को महत्वपूर्ण स्थान दो।

छोटे कंकर अर्थात् अपनी आजीविका, संयोगों को दूसरे स्थान पर रखो।

रेत का अर्थात् परिवार-समाज की छोटी-छोटी बातों को, झगड़ों को जीवन में कम ही स्थान दो।

अब यदि हम जार में सबसे पहले जार में रेत भरते तो पूरा जीवन क्लेशमय होता और कंकर भरते तो गेंद तो आती ही नहीं, रेत थोड़ी ही आती। इसलिये हमें महत्वपूर्ण कार्य पहले करना चाहिये।

सर आपने पानी का महत्व तो बताया ही नहीं - एक छात्र ने खड़े होकर पूछा।

प्रोफेसर ने मुस्कुराते हुये कहा - पानी स्वाध्याय की आवश्यकता सिद्ध करता है। हम जीवन में कितने ही व्यस्त क्यों न हों, चाहे किसी भी परिस्थिति में क्यों न हों हमें प्रत्येक परिस्थिति में स्वाध्याय का समय अवश्य निकालना चाहिये। स्वाध्याय से जीवन की हर परिस्थिति में साहस, शांति और धैर्य मिलेगा।

सब छात्रों ने खड़े होकर ताली बजाते हुये जीवन के इन रहस्यों को बताने के लिये धन्यवाद दिया।

ज्यादा बोझ लेकर चलने वाला अक्सर डूब 'सामान' का हो या 'अभिमान' का हो।

जिनदर्शन का परिणाम राजा बना भगवान

मगध देश के अन्तर्गत मिथिला नाम की नगरी में राजा पद्मरथ राज्य करते थे। वे बड़े परोपकारी और कुशल राजनीति वाले व्यक्ति थे। एक दिन राजा पद्मरथ शिकार खेलने के लिये घोड़े पर बैठकर वन में गये। उन्हें एक खरगोश दिखा तो उस खरगोश को पकड़ने के लिये वे पीछे भागे। वह खरगोश तेजी भागकर जंगल के बीच में चला गया और राजा देखता रह गया। उस खरगोश के पीछे भागते हुये राजा कालगुफा नामक एक गुफा के सामने पहुँच गया था जहाँ मुनिराज सुधर्म तपस्या कर रहे थे। मुनिराज को देखकर राजा पद्मरथ को अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव हुआ। उन्होंने घोड़े से उतरकर मुनिराज को नमस्कार किया और वहीं बैठकर मुनिराज की सौम्य मुद्रा को देखने लगे। मुनिराज ने जब आंख खोलीं तो सुधर्म को तत्त्व का उपदेश दिया और शिकार जैसे हिंसा के कार्यों का त्याग करने का उपदेश दिया। राजा ने अत्यंत भक्तिभाव से मुनि आज्ञा स्वीकार की और उनसे निवेदन किया - हे मुनिवर! कृपया यह बतायें कि कि संसार में आपके समान तेजस्वी अन्य कोई दूसरा व्यक्ति भी है या नहीं? यदि है तो वे किस स्थान पर हैं?

राजा की जिज्ञासा और भव्यता जानकर मुनिराज ने कहा कि बारहवें तीर्थंकर भगवान वासुपूज्य इस समय इसी धरती पर विराजमान हैं। उनकी देह का तेज सूर्य के प्रखर तेज के समान है। उनके पावन उपदेश से हजारों जीव अपना आत्मकल्याण कर रहे हैं। 100 इन्द्र उनकी वंदना कर रहे हैं। ऐसे दिव्य अलौकिक पुरुष से हमारी तुलना नहीं हो सकती। मुनिराज के भक्तियुक्त वचन सुनकर राजा को भगवान वासुपूज्य के

दर्शन करने की भावना हुई और वे वापस महल में आकर भगवान के दर्शन को चल पड़े। उनके साथ में सैनिक और नगर की प्रजा के अनेक लोग थे।

उसी समय धन्वन्तरी और विश्वानुलोम नाम के दो देवों ने राजा को भगवान वासुपूज्य के दर्शन करने जाते हुये देखा तो कौतुहलवश उनकी परीक्षा लेना शुरु कर दिया और राजा और प्रजा पर डराना प्रारंभ कर दिया। राजा को रास्ते काला भयंकर नाग दिखाई दिया, राजा का छत्रदण्ड टूट गया, भयंकर वर्षा प्रारंभ हो गई, जंगल में आग लग गई फिर तेज बारिश प्रारंभ हो गई। राजा के संग आये हुये लोग और सैनिक परेशान हो गये, कई लोगों ने यात्रा पर न जाने का निश्चय किया। मन्त्रियों ने यात्रा को अशुभ बतलाकर राजा को वापस लौटने की सलाह दी। परन्तु राजा पद्मरथ ने कहा - "तीर्थंकरों के दर्शन की यात्रा अशुभ नहीं हो सकती, मैं हर परिस्थिति में भगवान वासुपूज्य के दर्शन करुँगा, चाहे इसमें मेरे प्राण ही क्यों न चलें जायें....।" और उन्होंने 'नमः वासुपूज्याय' कहकर आगे प्रस्थान किया। राजा की अडिग भक्ति और दर्शन की पवित्र भावना को देखकर देवों ने प्रगट होकर राजा की जिनभक्ति की प्रशंसा की।

राजा भगवान के समवशरण में पहुँच गये। उन्होंने देखा कि तीर्थंकर परमात्मा अष्टप्रातिहार्यों से सहित शोभायमान हो रहे हैं, अनेक देव-विद्याधर-राजा-मुनिराज आदि उनकी भक्ति कर रहे हैं और भगवान की दिव्यवाणी से कल्याणकारी उपदेश हो रहा है। भगवान की अलौकिक मुद्रा देखकर उन्हें अपूर्व आनन्द हुआ और उन्होंने भगवान की वाणी का लाभ लिया। आत्मकल्याण की भावना से उन्होंने मुनि दीक्षा धारण की और उग्र साधना के बल पर वे भगवान वासुपूज्य के गणधर बन गये।

देखा आपने! जिनभक्ति की आस्था का परिणाम। राजा पद्मरथ स्वयं बन गये भगवान।

संकलन - ईर्या जैन, जबलपुर

स्पष्टीकरण

पिछले अंक के कवर के पीछे 80 फुट का मानव कंकाल मिला के नाम से एक समाचार प्रकाशित हुआ था। उस समाचार में कंकाल भारत में मिलना बताया गया था। उस समय हमें एक पाठक से हमें ऐसा ही समाचार प्राप्त हुआ था। परन्तु चहकती चेतना के एक जागरुक पाठक के अनुसार यह कंकाल भारत में नहीं बल्कि में मिला है।

इसका वीडियो भी आप इंटरनेट पर यू ट्यूब की बेबसाइट **www.youtube/.com/watch?v=q1JRnmYndNc** पर देख सकते हैं। भारत में 1 वर्ष पूर्व 18 फुट का कंकाल प्राप्त हुआ था। त्रुटि के लिये पत्रिका प्रकाशन मंडल क्षमाप्रार्थी है और साथ रचनायें अथवा तथ्य भेजने वाले साधर्मियों से प्रामाणिक तथ्य भेजने का निवेदन है।

जैन धर्म का गौरवशाली प्रभाव

प्राचीन काल में भगवान आदिनाथ से लेकर भगवान पार्श्वनाथ तक जैन धर्म को श्रमण, मुनि, आर्हत् धर्म के नाम से जाना जाता था। बौद्ध ग्रन्थों में तथा सम्राट के शिलालेखों में यह निग्गंठ निग्रन्थ नाम प्रसिद्ध रहा। इंडो ग्रीक और इंडोसिंथियन युग में श्रमण धर्म के नाम से प्रचलित रहा। पुराण काल में जिनधर्म या जैन धर्म के नाम विख्यात हुआ। बाद में अलग अलग स्थानों में इसे जिनशासन, स्याद्वादी, अनेकांतवादी भी पहचाना गया। जिस समय दक्षिण में भक्ति आंदोलन का जोर था तब जैन धर्म को भव्य धर्म भी कहा गया। सिन्ध, गांधार, पंजाब में विक्रम की बीसवीं शताब्दी तक इसे भावड़ा के नाम से पहचाना जाता रहा। बंगाल और बिहार में सराक श्रावक के नाम से जाना जाता रहा। सराक नाम से सरावगी जाति प्रचलित हुई। राजस्थान में आज भी सरावगी जाति के जैन धर्म के अनुयायी मिलते हैं।

श्री देवदत्त शास्त्री के अनुसार कुछ वर्ष पूर्व तक भारत वर्ष की सबसे पुरानी संस्कृति वैदिक संस्कृति मानी जाती रही परन्तु 1922-23 में जब पाकिस्तान के लरकाना जिले के मोहन-जोदड़ो स्थित एक टीले की खुदाई हुई तब वहाँ प्राप्त सामग्री से सिद्ध हुआ कि जैन संस्कृति ही सबसे पुरानी संस्कृति है। इसके बाद पश्चिमी पंजाब में मांऊटगुमरी नगर के पास हड़प्पा नामक स्थान पर खुदाई हुई। इसके बाद सिन्ध, बलूचिस्तान, कच्छ, अफगानिस्तान, जेहलम और व्यासा नदी आदि साङ्ग स्थानों पर खुदाई करने से प्राप्त सामग्री के आधार पर यह स्पष्ट हो गया कि भारत की सर्वाधिक प्राचीन संस्कृति जैन धर्म की है। मोहन जोदड़ो से भगवान ऋषभ की कायोत्सर्ग मुद्रा की प्रतिमायें प्राप्त हुईं हैं। इस क्षेत्र की खुदाई अभियान का नेतृत्व करने वाले श्री रामप्रसादजी चन्दा के अनुसार यहाँ कुछ सील भी प्राप्त हुईं हैं जिस पर नग्न मुद्रा, त्रिशूल, बैल का चिन्ह अंकित है। नग्न मुद्रा दिगम्बर मुनिराजों की, त्रिशूल रत्नत्रय का और बैल भगवान ऋषभदेव के चिन्ह के रूप में प्रसिद्ध है।

प्राचीन काल में जैनधर्म भारत में ही नहीं बल्कि तुर्किस्तान, नेपाल, भूटान, ब्रह्मा, अफगानिस्तान, ईराक, ईरान, पर्शिया, तिब्बत, अरब देश, लंका, आस्ट्रेलिया, काबुल आदि में प्रचलित था, इन देशों में इसके प्रमाण पाये गये हैं।

तुर्किस्तान में जैनधर्म - आज से लगभग 150 वर्ष पूर्व तुर्किस्तान के पूर्वी भाग में एक स्थान पर वृक्ष की छाल पर लिखी हुई एक पुस्तक मिली। यह पुस्तक प्राकृत भाषा में लिखी हुई है। कई स्थानों पर खुदाई में 1700 वर्ष पुराने ग्रन्थ मिले हैं जो कि खोराष्टी एवं प्राकृत लिपि में हैं। जैन शास्त्रों की रचना पहले प्राकृत भाषा में ही होती थी। इतिहासकारों का मानना है कि ये जैन ग्रन्थ ही हैं।

जिन भारतीयों ने 300 वर्ष पूर्व तुर्किस्तान की यात्रा की थी, उनके यात्रा विवरण के पत्रों से ज्ञात होता है कि 17वीं शताब्दी में तुर्किस्तान में विशाल जैन मंदिर थे। अनेक देशों के यात्री वहाँ जैन मंदिरों के दर्शन के लिये जाते थे।

अफगानिस्तान में जैन धर्म - अफगानिस्तान का प्राचीन नाम आश्वकायन है। प्राप्त प्रमाणों के अनुसार यहाँ के गांधार देश में भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा थी और उसके साथ 23 तीर्थंकरों की छोटी प्रतिमायें भी विराजमान थीं।

चीनी यात्री हुएनसांग ने ईस्वी सन् 686 से 712 तक भारत में भ्रमण किया था। उसने अपनी यात्रा के विवरण में लिखा कि कपिश देश में बौद्ध भिक्षुओं के साथ निर्ग्रन्थ साधुओं के दर्शन किये। कपिश अफगानिस्तान के अन्तर्गत है।

पर्शिया में जैन धर्म - प्रो. ए. चक्रवर्ती ने अपनी पुस्तक में लिखा कि पर्शिया में दिगम्बर साधुओं का विचरण होता था। इसके लिये उन्होंने प्रख्यात विदेशी लेखक अलेक्जेण्डर की पुस्तक Alexandria in Egypt. Encyclopedia Britanica Vol. 2 का उल्लेख किया है।

काबुल और ईरान में भी जैन धर्म का बहुत प्रभाव था। यहाँ वर्तमान में अनेक बार तीर्थंकरों की प्रतिमायें मिलतीं रहती हैं।

लंका - यहाँ प्राप्त होने वाले जैन धर्म के तीर्थंकरों की प्रतिमाओं, अवशेषों, स्मारकों से जैन धर्म के विपुल वैभव का पता चलता है। एक ऐतिहासिक पुस्तक में उल्लेख है कि The ruling monarch of Cylon built a vihar and a minastray for Nirgranthas in 3rd century B.C. (On the Indian sect of Jain Page 15)

अर्थात् ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी में लंका के राजा ने जैन मंदिर एवं निर्ग्रन्थों के लिये धर्मशाला का निर्माण करवाया था।

विक्रम संवत् 1806 में दिगम्बर जैन साधर्मी ब्रह्मचारी लामचीदास अनेक देशों की यात्रा पर गये और वहाँ से लौटकर उसने अपनी यात्रा का विवरण लिखकर उसकी 108 प्रतियाँ विभिन्न दिगम्बर जैन मंदिरों में सुरक्षित रखीं, जिसके कुछ अंश इस प्रकार हैं -

कोचीन मुल्क के बहावल पहाड़ पर गये वहाँ राजा ऋषभदेव के द्वितीय पुत्र भगवान बाहुबली की विशाल प्रतिमायें खड्गासन मुद्रा में हैं तथा यहीं पर बीदमदेश-होवी नगर में आमेढ़ना जाति के जैन रहते हैं तथा यहाँ के मंदिरों में सिद्ध भगवान की प्रतिमाओं के दर्शन किये।

चीन देश के गिरमदेश एवं ढाकुल नगरों की यात्रा करने पर पाया कि यहाँ के राजा एवं प्रजा सभी जैन हैं। चीन के ही पैकिन नगर में तुनावारे जाति के जैनी निवास करते हैं। यहाँ जैनियों के 300 जिनमंदिर हैं। सभी जिनमंदिर शिखरयुक्त हैं और रत्नों से मंडित हैं।

कई स्थानों पर मुनिराजों की केशलोंच करती हुई दीक्षा के समय की प्रतिमायें भी हैं।

तातर देश के सागर नगर की यात्रा की तो वहाँ पातके और घघेलवाल जाति के जैनों से मुलाकात हुई। यहाँ के जिनबिम्ब अत्यंत मनोहर हैं और प्रतिमाओं का आकार 31/2 गज है। सभी जिनबिम्ब चौथे काल के अंत समय के हैं।

इस तरह आप अपने महान जिनधर्म के व्यापक प्रभाव से परिचित हो रहे होंगे। इसके तथ्यों का उल्लेख अगले अंक में किया जायेगा।

ना किसी के अभाव में जियो, ना किसी के प्रभाव में जियो, यह जिन्दगी है आपकी, अपने स्वभाव में जियो।

राष्ट्र गीत में जैन शब्द का उल्लेख

आप सब जानते हैं कि भारत का गणतंत्र दिवस 26 जनवरी को मनाया जाता है। दिनांक 26 जनवरी 1950 को देश का संविधान लागू किया गया था। इस संविधान बनाने वाली सभा में सात जैन प्रतिनिधि थे और इस समिति के अध्यक्ष डॉ. भीमराव अम्बेडकर थे।

भारत के राष्ट्रगीत की रचना श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर ने की थी। इसे सर्वप्रथम भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन 27 दिसम्बर 1911 को गाया गया। इसकी रचना पाँच पदों में की गई थी। यह सभी जगह अधूरा ही गाया जाता है। इसके एक छन्द में जैन शब्द का उल्लेख किया गया है। वह छन्द इस प्रकार है -

अहरह तव आह्वान प्रचारित, शुचि तव उदार वाणी,
हिन्दु बौद्ध सिख जैन पारसिक, मुसलमान खिष्तानी।
पूरब पश्चिम आसे तव सिंहासन पाशे,
प्रेमहार हय गाथा।
जन-गण-ऐक्य-विधायक जय हे, भारत भाग्य विधाता।
जय हे, जय हे, जय हे, जय जय जय हे।।

- जैनत्व की गौरव गाथा भाग 2 से साभार।

हमारे नये परम संरक्षक - श्री जैन बहादुर जी जैन

संस्था की गतिविधियों से प्रभावित होकर कानपुर निवासी श्री जैन बहादुर जैन ने आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर के शिरोमणि परम संरक्षक पद सहर्ष स्वीकार किया है। श्री जैन बहादुर जिनशासन के प्रति समर्पित व्यक्तित्व हैं और नित्य स्वाध्याय आदि धार्मिक गतिविधियों में संलग्न रहते हुये तत्वप्रचार की गतिविधियों में निरन्तर सहयोग प्रदान करते हैं।

हर्ष का विषय है कि नागपुर में दिनांक 1 जनवरी से 7 जनवरी 2015 तक होने वाले श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव में आपने एवं आपकी धर्मपत्नी श्रीमति स्नेहलता जैन ने भगवान के माता-पिता के महान दायित्व का निर्वाह करने का सौभाग्य प्राप्त किया है।

संस्था आपके पवित्र परिणामों की मंगल अनुमोदना करती है।

मोबाईल के शौक ने ली माँ की जान

आधुनिक तकनीकों का प्रयोग एक ओर कार्य को आसान बना रहा है वहीं दूसरी ओर इसकी लत भयानक रूप लेती जा रही है। मोबाइल फोन का प्रयोग निश्चित रूप से संपर्क का सबसे सरल माध्यम है। परन्तु मोबाइल के नये स्वरूपों एंड्रायड फोन में समय की व्यर्थ बरबादी हो रही है। आजकल घटने वाली घटनाओं में व्हाट्स एप और फेसबुक का बड़ा योगदान है। आज की युवा पीढ़ी इन एप्स के प्रयोग को जीवन का श्रेष्ठ कार्य मानने लगी है। पढ़ाई में ध्यान कम ध्यान देकर आज के लड़के-लड़कियाँ अनावश्यक और सारहीन बातों में आनंद मान रहे हैं। इससे उनका भविष्य तो अंधकारमय हो ही रहा है साथ चरित्र का पतन भी हो रहा है।

कुछ दिन पूर्व घटित एक घटना ने सहज ही सोचने पर मजबूर कर दिया है। भारत के ही एक बड़े शहर की एक युवती एंड्रायड फोन का प्रयोग करती थी। सुबह से शाम तक उसका फोन ही उसका सबसे प्यारा साथी बन गया था जिससे उसकी कॉलेज की पढ़ाई पर असर होने लगा। माँ को अपनी बेटी के भविष्य की चिन्ता थी इसलिये उसने कई बार उसे समझाने का प्रयास किया परन्तु बेटी नहीं मानी। माँ को श्वांस की बीमारी थी इसलिये कई बार समस्या होने पर उसे स्प्रे से दवा लेना पड़ती थी। एक दिन जब बेटी जब कॉलेज से लौटी तो अपना फोन बाहर रखकर वह बाथरूम में चली गई। माँ ने बेटी को समझाने के लिये उसका फोन छिपाकर रख दिया। जब बेटी बाहर आई तो उसने माँ से फोन के बारे में पूछा तो माँ ने उसे फोन का प्रयोग कम करने के लिये कहा। बेटी ने माँ की बात को न समझते हुये अपना फोन मांगा परन्तु माँ ने फोन देने से मना कर दिया। बेटी ने अपनी माँ से बहुत देर तक बहस की । फोन न मिलने पर बेटी का गुस्सा बढ़ता गया और बेटी ने माँ के कमरे में जाकर उनका दवाई का स्प्रे खिड़की के बाहर रख दिया और वापस आकर अपनी माँ से बहस करने लगी। जोर-जोर से बोलने के कारण माँ की सांस फूलने लगी और उसने अपनी बेटी से स्प्रे लाने को कहा मगर बेटी ने ध्यान नहीं दिया। जब माँ की हालत बिगड़ने लगी तो बेटी घबरा गई और तुरन्त माँ के कमरे की तेजी से भागी और खिड़की के बाहर रखा हुआ स्प्रे उठाना चाहा। घबराहट में स्प्रे उसके 8 वीं मंजिल पर स्थित घर से नीचे गिर गया। जब तक वह ग्राउंड पलोर पर आकर स्प्रे उठाकर वापस लाकर लाई तब तक उसकी माँ की मृत्यु हो गई थी।

एक मोबाइल के शौक की अति ने उसे माँ के प्यार से जीवन भर के स्नेह से वंचित कर दिया। जरा गंभीरता से सोचिये क्या हमारे परिवार में इस समस्या का जन्म तो नहीं हो गया समस्या को पहचानिये और आज ही समाधान कर भविष्य को सुन्दर एवं संस्कारित बनाईये।

गरीब आदमी मंदिर के बाहर भीख मांगता है और अमीर आदमी मंदिर के अंदर भीख मांगता है।

इस प्रकार जो 18 प्रकार की श्रेणियों का स्वामी है वह 'राजा' होता है और यही राजा 'मुकुटधारी' हो सकता है।

- जो पाँचसौ 'मुकुटधारी' राजाओं का स्वामी है वह 'अधिराजा' कहलाता है।
- जो एक हजार 'मुकुटधारी' राजाओं का स्वामी है वह 'महाराजा' कहलाता है।
- जो दो हजार 'मुकुटधारी' राजाओं का स्वामी है वह 'मुकुटबद्ध' या 'अर्द्धमांडलिक' कहलाता है।
- जो चार हजार 'मुकुटधारी' राजाओं का स्वामी है वह 'मांडलिक' कहलाता है।
- जो आठ हजार 'मुकुटधारी' राजाओं का स्वामी है वह 'महा मांडलिक' कहलाता है।
- जो सोलह हजार 'मुकुटधारी' राजाओं का स्वामी है वह 'अर्द्धचक्री' कहलाता है।
- जो बत्तीस हजार 'मुकुटधारी' राजाओं का स्वामी है वह 'सकल चक्रवर्ती' कहलाता है अर्थात् वह सम्पूर्ण भरत क्षेत्र के छःखण्डों का स्वामी होता है। इस प्रकार चक्रवर्ती का शासन निर्बाध चलता रहता है।
- **षट्खण्ड में भरत खंड के एक-एक देश में रहने वाले ग्राम आदि की संख्या और उनका स्वरूप -**
- एक-एक देश में एक-एक समुद्र होता है। उन समुद्रों में टापू अर्थात् 56 अन्तर्द्वीप होते हैं और जहाँ रत्न उत्पन्न होते हैं ऐसे 26 हजार समुद्र हैं जिन्हें रत्नाकर भी कहा जाता है। भरत खण्ड का मुख्य नगर या राजधानी गंगा और सिन्धु महानदियों के मध्य में विद्यमान आर्यखण्ड में होता है।
- **ग्राम -** जिस गांव के चारों ओर दीवाल कोट होता है उसे 'ग्राम' कहते हैं। इन ग्रामों की संख्या 96 करोड़ होती है।
- **नगर -** जो गांव चारों ओर से दीवाल और चार दरवाजों से युक्त है उसे 'नगर' कहते हैं। इन नगरों की संख्या 75 हजार है।
- **खेट -** नदी और पर्वतों से घिरे हुये गांव को 'खेट' कहते हैं। खेट 76 करोड़ होते हैं।
- **कर्वट -** पर्वतों से घिरे हुये गांव को 'कर्वट' कहते है। कर्वट 24 हजार होते हैं।
- **मटम्ब -** जहाँ पाँच सौ ग्रामों का प्रधान जनपद होता है उसे 'मटम्ब' कहते हैं। मटम्ब 4 हजार होते हैं।
- **पट्टन -** जहाँ रत्न उत्पन्न होते हैं उस गांव को 'पट्टन' कहते हैं। पट्टन 48 हजार होते हैं।
- **द्रोणमुख -** समुद्र के किनारे से घिरे हुये गांव को 'द्रोणमुख' कहते हैं। द्रोणमुख 99 हजार होते हैं।
- **संवाहन -** बहुत प्रकार के अरण्यों से युक्त महापर्वत के शिखर पर स्थित रहने वाले गांवों को 'संवाहन' कहते हैं। संवाहन 14 हजार होते हैं।

क्रमशः - शेष विवरण अगले अंक में

जो देव-शास्त्र-गुरु की उपेक्षा करते हैं, वे सर्वत्र उपेक्षित होते हैं।

शलाका पुरुष

पिछले अंक में आपने पढ़ा कि वस्तु व्यवस्था के अंतर्गत में प्रत्येक काल में 63 शलाका महापुरुष होते हैं। इनमें हम चक्रवर्ती के स्वरूप के बारे में जानकारी प्रस्तुत कर रहे हैं -

चक्रवर्ती के स्वामित्व का स्वरूप

चक्रवर्ती का 32 हजार राजाओं पर स्वामित्व होता है। उन राजाओं के लक्षण निम्न प्रकार समझना चाहिये -

नृपति - जो समस्त नर अर्थात् मनुष्यों का रक्षण करने वाला है वह 'नृप' या 'नृपति' कहलाता है।

भूप - समस्त पृथ्वी का जो रक्षक है वह 'भूप' या 'भूपति' कहलाता है।

राजा - जो समस्त प्रजाजनों का प्रसन्न रखता है वह 'राजा' कहलाता है।

इन राजाओं में छह गुण होते हैं -

1.संधि मिलाप 2. विग्रह युद्ध 3. यान वाहन 4. आसन शान्ति 5. द्वैधी भाव - शत्रु में सन्धि या विग्र करा देना 6. आश्रय आधार अर्थात् जो शत्रु अपने से प्रबल हो उसका आश्रय लेना और जो अपने आधीन रहे उसे आश्रय देना।

1. संधि - राज्य करने वालों को प्रथम अपनी आत्मा का ध्यान रखना चाहिये अर्थात् अपने स्वयं के प्राणों की रक्षा करना चाहिये।

2. मतिपालन - अपनी बुद्धि निर्मल रखना चाहिये।

3. कुलपालन - राजकुल व राजकुल के अनुरूप आचरण का पालन करना चाहिये।

4. प्रजापालन - अपने पुत्र के समान प्रजाजनों की रक्षा करना चाहिये।

इन राजाओं की 18 प्रकार की श्रेणियाँ होती हैं और राजा इनका स्वामी होता है।

1. सेनापति - सेना का नायक।

2. गणकपति - ज्योतिषी आदि विद्वानों का नायक।

3. वणिकपति - व्यापारियों का नायक।

4. दण्डपति - समस्त सेनाओं का नायक।

5. मंत्री - पंचाग मंत्र विषय में कुशल।

6. महत्तर - कुलवान अर्थात् कुल विशेष की उच्चता वाला।

7. तलवर - कोतवाल का स्वामी।

8. ब्राह्मण 9. क्षत्रिय 10. वैश्य 11. शूद्र- इन चारों वर्णों का स्वामी। **12. हाथी 13. घोड़ा 14. रथ 15.पदाति-** इस चतुरंग बल का स्वामी।

16. पुरोहित - आत्म हित कार्य का अधिकारी।

17. अमात्य - देश का अधिकारी।

18. महामात्य - समस्त राज्य कार्यों का अधिकारी।

जिसका पुण्य उदय नहीं हो तो उसे हम कुछ दे भी नहीं सकते।

जन्म

प्रश्न : 1 जन्म किसे कहते हैं ?

उत्तर - पूर्व शरीर को त्यागकर नवीन शरीर धारण करने को जन्म कहते हैं।

प्रश्नः2- जन्म के कितने भेद हैं ?

उत्तर - जन्म के तीन भेद हैं- **1. सम्मूर्च्छन जन्म** - जो चारों ओर के वातावरण से शरीर योग्य पुद्गलों को ग्रहण करते हैं वह सम्मूर्च्छन जन्म है। जैसे चुम्बक अपने योग्य लोह कण को ग्रहण करती है।

2. गर्भ जन्म - माता के उदर में रज और वीर्य के परस्पर गरण अर्थात् मिश्रण को गर्भ कहते हैं अथवा माता के द्वारा उपभोग किये आहार के गरण होने को गर्भ कहते हैं और इससे होने वाले जन्म को गर्भ जन्म कहते हैं।

3. उपपाद जन्म - देव-नारकियों के उत्पत्ति स्थान विशेष को उपपाद और उनके जन्म स्थान को उपपाद जन्म कहते हैं।

प्रश्नः 3- गर्भ जन्म के कितने भेद हैं ?

उत्तर - **जरायुज** - जन्म के समय प्राणियों के ऊपर जाल की तरह खून और मांस की जाली लिपटी रहती है उसे जरायु कहते हैं और जरायु से उत्पन्न होने वाले को जरायुज कहते हैं। जैसे - गाय, भैंस, मनुष्य, बकरी आदि।

अण्डज - जो नाखून की त्वचा के समान कङ्कोर है, गोल है और जिसका आवरण शुक्र और शोणित से बना है, उसे अण्ड कहते हैं और जो अण्डों से पैदा होते हैं वे अण्डज कहलाते हैं। जैसे - कबूतर, चिड़िया, छिपकली और सर्प आदि।

पोत - जो जीव जन्म लेते ही चलने-फिरने लगते हैं, उनके ऊपर कोई आवरण नहीं होता है, उन्हें पोत कहते हैं। जैसे - हिरण, शेर आदि।

विशेष - जरायुज में मांस की थैली में उत्पन्न होता है और अण्डज में अण्डे के भीतर उत्पन्न होकर बाहर निकलता है वैसे पोत में किसी आवरण से युक्त नहीं होता, इसलिये उसे पोतज नहीं कहा जाता, वह पोत कहलाता है।

प्रश्न : 4 कौन से जीवों को कौन सा जन्म होता है ?

उत्तर - देव और नारकियों का - उपपाद जन्म।

मनुष्यों और तिर्यन्चों का - गर्भ जन्म और सम्मूर्च्छन जन्म।

1,2,3,4 इन्द्रिय वाले जीवों का - सम्मूर्च्छन जन्म।

लब्धि अपर्याप्तक मनुष्य एवं तिर्यन्चों का - सम्मूर्छन जन्म।

प्रश्नः5 योनि किसे कहते हैं ?

उत्तर - जिसमें जीव जाकर उत्पन्न हो नाम योनि है।

प्रश्नः6 योनि और जन्म में क्या अन्तर है ?

उत्तर - योनि आधार है और जन्म आधेय है।

प्रश्नः7- चौरासी लाख योनियाँ कौनसी हैं ?

छहढ़ाला का वीडियो अब एन्ड्रायड फोन में

दिगम्बर जैन समाज की सर्वाधिक लोकप्रिय रचना पण्डित दौलतरामजी कृत छहढाला अब गूगल प्ले स्टोर में उपलब्ध है। आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर द्वारा लगभग ५ वर्ष पूर्व बनाये गये छहढ़ाला वीडियो सीडी के आधार से इसका एप तैयार किया गया है। इसका निर्माण केवलज्ञान एजुकेशन ट्रस्ट, इंदौर द्वारा किया गया है। इस कार्य को करने में इंदौर निवासी पण्डित श्री सौरभ शास्त्री एरां पण्डित श्री गौरव शास्त्री ने अपने सहयोगियों के साथ एक वर्ष तक अथक परिश्रम किया है। आप छहढ़ाला को छन्द या अर्थ देखने के लिये गूगल प्ले स्टोर में टाइप करके सर्च करके डाउनलोड कर सकते हैं।

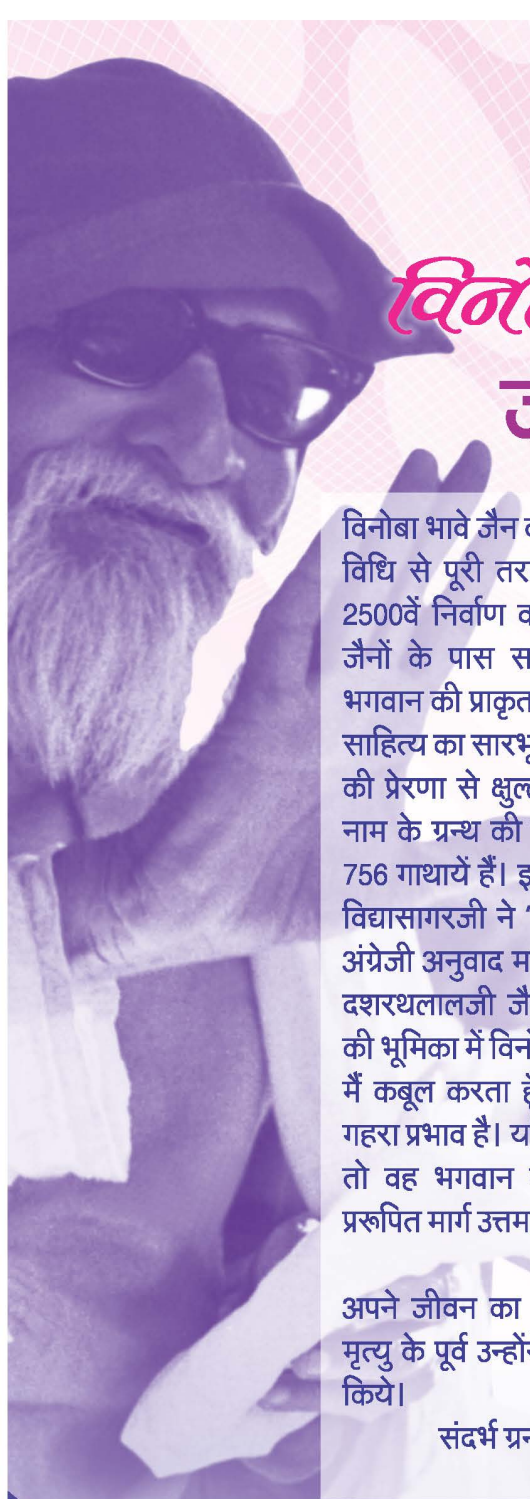

विनोबा भावे पर जैन धर्म का प्रभाव

विनोबा भावे जैन दर्शन की सल्लेखना समाधि मरण की विधि से पूरी तरह परिचित थे। भगवान महावीर के 2500वें निर्वाण वर्ष में में विनोबा को भावना हुई कि जैनों के पास साहित्य विपुल और समृद्ध है। इस भगवान की प्राकृत वाणी में लिखा गया है। विशाल जैन साहित्य का सारभूत ग्रन्थ प्रकाशित होना चाहिये। उन्हीं की प्रेरणा से क्षुल्लक जिनेन्द्र वर्णी जी ने 'समणसुत्तं' नाम के ग्रन्थ की रचना की। इसमें चार अध्याय और 756 गाथायें हैं। इस ग्रन्थ का हिन्दी पद्यानुवाद आचार्य विद्यासागरजी ने 'जैन गीता' के नाम से किया है तथा अंग्रेजी अनुवाद मध्यप्रदेश सरकार के पूर्व गृह मंत्री श्री दशरथलालजी जैन, छतरपुर ने किया है। समणसुत्तं की भूमिका में विनोबाजी ने स्वयं लिखा कि -

मैं कबूल करता हूँ कि मेरे जीवन पर गीता ग्रन्थ का गहरा प्रभाव है। यदि गीता से अधिक किसी का प्रभाव है तो वह भगवान महावीर हैं। भगवान महावीर द्वारा प्ररूपित मार्ग उत्तम है।

इसी प्रभावित होकर विनोबा भावे ने अपने जीवन का अंत समाधिमरण पूर्वक किया और मृत्यु के पूर्व उन्होंने दिगम्बर जैन साधुओं के दर्शन भी किये।

संदर्भ ग्रन्थ - समणसुत्तं ग्रन्थ की भूमिका

प्रेरक प्रसंग

संतोष

पण्डित सदासुखदास जी अत्यंत संतोषी जीव थे और निरन्तर पूजन, स्वाध्याय, सामायिक, चिन्तन, ग्रन्थ लेखन आदि कार्यों के द्वारा अपने समय का सदुपयोग करते थे। वे राजा की एक सरकारी संस्था में कार्य करते थे। उन्हें जो भी वेतन मिलता था वे उसी में संतुष्ट रहते थे। उन्हें मात्र दस रुपये वेतन मिलता था। वे चालीस वर्षों तक दस रुपये मासिक वेतन पर कार्य करते रहे। एक बार एक अधिकारी ने उनके सामने वेतन वृद्धि का प्रस्ताव रखा तो वे बोले - जो मुझे मिलता है वह मेरे और मेरे परिवार के लिये पर्याप्त है। यदि आप मेरे कार्य से प्रसन्न हैं तो वेतन न बढ़ायें बल्कि मेरे कार्य करने का समय दो घंटे कम कर दें, जिससे मैं अपना अधिक समय स्वाध्याय या आत्म चिन्तन में व्यतीत कर सकूँ। अधिकारी ने पण्डितजी की निस्पृहता से प्रभावित होकर उनके कार्य के दो घंटे भी कम कर दिये और वेतन वृद्धि भी कर दी। ऐसे थे हमारे पण्डित श्री सदासुखदासजी।

भावना

एक श्रावक थे पण्डित श्री छत्रपति। वह अलीगढ़ के खिरनी सराय मोहल्ले में रहते थे। आज भी उनका घर वहाँ पर मौजूद है। वह बड़े सन्तोषी थे। वह किराना की दुकान करते थे। उनका नियम था कि वे प्रतिदिन एक रुपये से अधिक नहीं कमायेंगे। एक रुपये में वे दस आने धर्म कार्यों में, पाँच आने अपने घर खर्च के लिये और एक आना की बचत करते थे। प्रतिदिन प्रायः एक घंटे में एक रुपये की आमदनी हो जाती थी, अतः वे दुकान बंद करके अपना शेष समय धार्मिक कार्यों में और साहित्य सेवा में व्यतीत करते थे। पहले एक रुपये में सोलह आने होते थे। आना एक प्रकार की मुद्रा का नाम था।

ऐसी भी ईमानदारी

श्रावक शिरोमणि पण्डित गोपालदासजी बरैया का चरित्र बहुत ही उज्ज्वल था। एक बार वे अपने बेटे के साथ रेल में यात्रा कर रहे थे। उस समय तीन साल तक के बच्चे का टिकिट नहीं लगता था। इसलिये उन्होंने बच्चे का टिकिट नहीं लिया। यात्रा पूरी करने के बाद उन्हें पता चला कि उनका बेटा तीन साल और छः दिन का हो गया है। उन्होंने तुरन्त आधे टिकिट का पैसा रेल्वे का भेजा और अपनी गल्ती की क्षमा मांगते हुये एक पत्र भी लिखा।

फुरसत नहीं घर से मंदिर तक इंसान को आने की और इच्छा श्मशान से सीधा स्वर्ग जाने की रखते हैं।

आधुनिक दोहे

श्री राजकुमार शास्त्री, बांसवाड़ा राज.

पुस्तक जिनके हाथ में, जाने कहाँ है ध्यान।
पिज्जाहारी हो रहे, कैसे होगा ज्ञान ?।
मोबाइल है जेब में, इयरफोन है कान ।
मन में कन्या बस रही, कैसे होगा ज्ञान ।।
शिक्षक को नौकर कहें, विद्यालय दिखे मकान ।
अनुशासन बंधन लगे, कैसे होगा ज्ञान ?।
कमा कमाकर पिताजी, धन भेजें मनमान ।
जहाँ तहाँ घूमत फिरें, कैसे होगा ज्ञान ?।
हीरों जिन्हें आदर्श हैं, वीरों से अनजान।
देशभक्त मूरख लगें, कैसे होगा ज्ञान ?।
वेलेन्टाइन याद है, शिक्षक दिवस भुलाय।
गुरु पूजन पुरानी लगे, पग लागत शरमाय।।
पिक्चर देखें गाना सुनें, अरु डेटिंग पर जायें।
गप्पों में रात भर जगें, यों ही समय गमांय।।
पिता पुत्र को दे रहे, धन कैसे कमायें।
दर्शन-पूजन छोड़कर, धन ही लक्ष्य बनायें।।
परिजन, पुरजन छोड़कर, जब विदेश भग जायें।
मात-पिता रोते रहें, कलयुग का दोष बतायें।
पूजा-भक्ति-आरती कर कर प्रभु को सुनायें।
पर प्रभु की सुनते नहीं, सुख-शान्ति कैसे पायें।
ट्रस्टीगण चन्दा करें, सब मिल करें विधान।
धर्म का केवल नाम है, लक्ष्य है आवे दान।।
मंदिर में भक्ति करें, मन भटके चहुं ओर।
वचनों से भजन कहें, मन भोजन की ओर।।

मुझे तुम पर गर्व है बेटा !

बेटा! अपनी पढ़ाई ध्यान से करना बेटा और अपनी मम्मी को परेशान मत करना।

आप बिल्कुल चिन्ता मत करें पापा! मैं आपकी हर बात का ध्यान रखूँगा। अब मेरे रुपये...

हाँ हाँ मुझे याद है बेटा! ये लो तुम्हारे दो सौ रुपये। - पापा ने रुपये देते हुये कहा।

थैंक्यू पापा!

इतना कहकर स्वाधीन के पापा अपने व्यापार के काम से बाहर चले गये। स्वाधीन के पापा को व्यापार के कारण हर माह लगभग ४-५ बार बाहर जाना पड़ता था। पर स्वाधीन को अच्छा नहीं लगता था कि उसके पापा उससे दूर रहें। पर वह पापा की मजबूरी समझता था। चार वर्ष पूर्व एक बार पापा ने उसे बाहर जाते समय दो सौ रुपये दे दिये तबसे स्वाधीन का रुपये लेने का नियम बन गया। जब भी पापा बाहर जाते उसे रुपये देकर जाते। साथ ही स्वाधीन को विशेष त्यौहार में, जन्म दिन में, किसी के मेहमान के आने पर रुपये मिलते रहते थे। पापा ने पोस्ट ऑफिस में स्वाधीन का बचत खाता भी खुलवा दिया था जिससे वह अपनी राशि जमा करता रहे। एक दिन स्वाधीन के पापा को विचार आया कि स्वाधीन अब बड़ा हो रहा है और उसे घर के काम के लिये एक स्कूटी या एक्सिस गाड़ी दिलवा देना चाहिये। उन्होंने पोस्ट ऑफिस जाकर पूछा तो पता चला कि स्वाधीन के एकाउंट में मात्र छः हजार रुपये हैं। यह जानकर उन्हें बहुत दुःख हुआ और उन्हें लगा कि स्वाधीन जरूर किसी गलत संगति में पड़ गया है। उन्होंने घर पर जाकर अपनी पत्नी से पूछा तो उन्होंने कहा - मुझे इस बारे में कुछ नहीं पता।

दोनों दुःखी होकर चर्चा करने लगे कि हमने स्वाधीन की सुख-सुविधा का कितना ध्यान रखा, उसकी हर इच्छा पूरी की, अच्छे संस्कार दिये और स्वाधीन ने हमारी सारी आशाओं को समाप्त कर दिया।

इतने में स्वाधीन घर में आया तो पापा ने चिल्लाकर कहा - स्वाधीन! पहले यहाँ आओ.... मुझे तुमसे कुछ पूछना है। स्वाधीन ने अपने पिता को पहली बार क्रोध करते

पीपल के पत्तों जैसे मत बनो जो समय आने पर सूखकर गिर जाते हैं।

देखा था। वह बहुत डरते-डरते पापा के पास आया।

सच-सच बताओ! तुम्हें जो रुपये मिलते थे उनका तुमने क्या किया? बोलो.....।

पापा! मैं वो.. वो.... वो ....- डर के मारे स्वाधीन की आवाज ही नहीं निकल रही थी।

पापा ने जोर से एक चांटा स्वाधीन के गाल पर मार दिया। नालायक! मेरे संस्कारों का ये फल मिला.... मुझे सच बता! तूने उन रुपयों का क्या किया यदि तुम नहीं बताओगे तो अच्छा नहीं होगा...।

पापा! उन रुपयों से मैंने अनेक पक्षियों को मुक्त किया है ।

क्या मतलब? कुछ समझा नहीं।

पापा! आप ही कहते हैं कि बंधन में बहुत दुःख है, कोई भी प्राणी बंधन में नहीं रहना चाहता। आपकी बात को मैंने भी अनुभव किया। मुझसे इन पक्षियों को पिंजरे में बंद नहीं देखा गया। इसलिये मैं महीने में दो या तीन बार पक्षियों के बाजार जाता था और वहाँ से पक्षी खरीदकर उन्हें शहर के बाहर जाकर उड़ा देता था और कई बार मैंने बाजार से मछलियाँ खरीदकर उन्हें शहर के बाहर वाले तालाब में छोड़ दीं। बस इसी काम में मेरे रुपये खर्च होते रहे। - स्वाधीन ने सिसकते हुये कहा।

तुमने मुझे बताया क्यों नहीं ? - पापा ने आश्चर्य से पूछा

पापा! आप इतनी मेहनत से रुपये कमाते हैं, मुझे लगा कि आप नाराज होंगे और मैंने कोई गलत काम नहीं किया।

ये गलत काम नहीं बेटा! यह तो महान कार्य है। तुमने वह कार्य किया है जिसे मैं सोच भी नहीं सका।- पापा ने स्वाधीन को गले लगाते हुये कहा।

पापा! आई एम सॉरी।

सॉरी तो मैं बोलूँगा बेटा! मैंने तुम्हें समझ ही नहीं पाया और मैंने तुम्हें मारा। मुझे तुम पर गर्व है बेटा !

पापा ! आई लव यू।

और हाँ! अब मैं भी तुम्हारे साथ चलूँगा पक्षियों और मछलियों को छोड़ने....

थैंक्यू पापा।

पहचान बताओ

ध्यान से इस चित्र को देखिये । इस चित्र में
कुछ तीर्थंकरों के चिन्हों के अंश हैं, उन्हें खोजकर तीर्थंकरों के नाम
चिन्ह सहित लिखिये । उत्तर इसी अंक में

उत्तर - श्री आदिनाथजी-बैल, श्री अजितनाथ जी - हाथी
श्री संभवनाथ जी - घोड़ा, श्री कुन्थुनाथ जी - बकरा, श्री महावीर स्वामी-शेर

अज्ञानता सबसे बड़ा अभिशाप है।

संस्था की 15 वर्षीय योजना के नये सदस्य

संस्था द्वारा संचालित 15 वर्षीय योजना का सदस्य बनने पर संस्था द्वारा पूर्व में निर्मित सीडी, साहित्य भेजा जायेगा तथा चहकती चेतना पत्रिका के साथ आगामी 15 वर्षों तक संस्था द्वारा निर्मित होने वाली समस्त सामग्री भी निःशुल्क भेजी जायेगी।

इसके नवीन सदस्य - 1. श्री प्रकाश जैन, सूरत

कमाल की विशुद्धि

कोलकाता प्रवासी श्री अमित शास्त्री की 5 वर्षीय पुत्री विशुद्धि जिनधर्म के संस्कारों से अपना जीवन पवित्र कर रही है। नन्हींसी उम्र में विशुद्धि को अनेक धार्मिक कवितायें, जिनशासन की सैद्धांतिक बातें याद हैं। वह माइक पर निःसंकोच बोलती है। पाठशाला के प्रभाव से छोटीसी उम्र में ही विशुद्धि ने बाजार की टॉफी-बिस्किट-ब्रेड का त्याग कर दिया है। विशुद्धि के पिता श्री दिगम्बर जैन मंदिर, पुद्दोपुकुर कोलकाता में विद्वान और मंदिर प्रबंधक के रुप में अपनी सेवायें दे रहे हैं। विशुद्धि के सदाचार-संस्कारमय पवित्र जीवन हेतु चहकती चेतना परिवार की ओर से मंगलमय शुभकामनायें।

पुजारी की आवश्यकता

तीर्थधाम पोन्नूर मलै में जिनमंदिर में पुजारी की आवश्यकता है जो जिनमंदिर के साथ पुस्तकालय की देखभाल कर सके। चयनित व्यक्ति को आवास - भोजन के साथ आकर्षक वेतन के साथ मेडीकल बीमा आदि की सुविधा प्रदान की जायेगी।

संपर्क - विराग शास्त्री, जबलपुर - 9300642434

सहयोग प्राप्त

1000/- जीवन शिल्प परिवार, बानपुर जि. ललितपुर की ओर से

छहढाला प्रवचन शिविर सम्पन्न

आध्यात्मिक सत्पुरुष श्री कानजी स्वामी के 125वें जन्म जयन्ती वर्ष में श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट मुम्बई द्वारा प्रायोजित छहढाला वर्ष के अंतर्गत विविध छहढाला प्रवचन शिविर संपन्न हुये।

चिखली - बुलढ़ाणा जिले के चिखली गाँव में दिनांक 23 अक्टूबर से 26 अक्टूबर 2014 तक छहढाला प्रवचन शिविर संपन्न हुआ। इस अवसर पर छिन्दवाड़ा से पधारे श्री जितेन्द्र शास्त्री के तीन समय प्रवचनों का लाभ मिला। प्रातःकाल गुरुदेवश्री के छहढाला पर सीडी प्रवचन चलाये गये। सीडी प्रवचन में मुख्य बिन्दुओं की चर्चा समागत विद्वान द्वारा की गई। शाम को बाल कक्षा का आयोजन किया गया। **- सतीश बेलोकर**

राघौगढ़ - शिवपुरी के जिले के राघौगढ़ नगर में दिनांक 23 अक्टूबर से 26 अक्टूबर 2014 तक छहढाला प्रवचन शिविर संपन्न हुआ। इस अवसर पर कोटा से पधारे पण्डित श्री जयकुमारजी जैन के तीन समय प्रवचनों का लाभ मिला। प्रातःकाल गुरुदेवश्री के छहढाला पर सीडी प्रवचन चलाये गये। सीडी प्रवचन में मुख्य बिन्दुओं की चर्चा समागत विद्वान द्वारा की गई। रात्रि में विषय पर व्याख्यान हुआ। समस्त कार्यक्रमों में श्री अशोक शास्त्री मांगुलकर का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। **- अशोक मांगुलकर**

करेली म.प्र.- अष्टान्हिका महापर्व के अवसर पर यहाँ दिनांक 30 अक्टूबर से 6 नवम्बर 2014 तक छहढाला प्रवचन शिविर संपन्न हुआ। इस पर्व पर पण्डित श्री रजनीभाई दोसी हिम्मतनगर गुज. के मांगलिक प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ। प्रातःकाल गुरुदेवश्री के छहढाला पर सीडी प्रवचन चलाये गये। सीडी प्रवचन में मुख्य बिन्दुओं की चर्चा समागत विद्वान द्वारा की गई। पण्डित श्री रजनीभाई की विशिष्ट रोचक शैली से युवा वर्ग विशेष प्रभावित हुआ। **- मुकेश जैन**

सिद्धचक्र मण्डल विधान एवं छहढाला प्रवचन शिविर संपन्न

अष्टान्हिका महापर्व के अवसर पर यहाँ श्री सिद्धचक्र मण्डल विधान एवं छहढाला प्रवचन शिविर संपन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ विधान आयोजनकर्ता श्रीमति शशिकांता गुलाबचंद शैलेषकुमार जैन परिवार के निवास से मंगल शोभायात्रा पूर्वक हुआ। ध्वजारोहण श्री गुलाबचंदजी जैन सागर के करकमलों से हुआ। श्री कुन्दकुन्द दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल ट्रस्ट टीकमगढ़ द्वारा ज्ञान मंदिर में आयोजित इस विधान में पण्डित श्री सुबोधजी सिंघई के प्रतिदिन तीन बार स्वाध्याय का लाभ प्राप्त हुआ। रात्रि में पूज्य गुरूदेवश्री के छहढाला प्रवचन एवं मंगल वाणी वीडियो प्रवचन चलाये गये। सीडी प्रवचन के पश्चात् श्री विराग शास्त्री द्वारा प्रवचन में आगत विशिष्ट बिन्दुओं पर चर्चा की गई। जिसे

सुनकर उपस्थित साधर्मियों को गुरूदेवश्री के अध्यात्म रहस्यों से परिचय प्राप्त हुआ। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों के अंतर्गत इन्द्र सभा, जिनवाणी मंथन, संगीतमय कथा, आचार्य कुन्दकुन्द का जीवन दर्शन आदि रोचक कार्यक्रम हुये।

सम्पूर्ण कार्यक्रम विधानाचार्य श्री विराग शास्त्री जबलपुर के निर्देशन में आचार्य धरसेन सिद्धांत महाविद्यालय कोटा के श्री उर्विस शास्त्री, श्री आदित्य शास्त्री एवं श्री राकेश शास्त्री लिधौरा, श्री आशीष शास्त्री टीकमगढ़ के सहयोग से संपन्न हुआ।

घाटकोपर मुम्बई.- अष्टान्हिका महापर्व के अवसर पर श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल द्वारा आयोजित आध्यात्मिक व्याख्यानमाला का कार्यक्रम संपन्न हुआ। इस पर्व पर पण्डित श्री राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर के तीन समय विशेष व्याख्यानों का लाभ प्राप्त हुआ। प्रतिदिन गुरुदेवश्री के मंगलवाणी वीडियो सीडी प्रवचन चलाये गये। सीडी प्रवचन में मुख्य बिन्दुओं की चर्चा समागत विद्वान द्वारा की गई। मंगलवाणी के वीडियो प्रवचन के नवीन प्रयास की सभी स्थानों पर अत्यंत सराहना की गई। **- विजय भाई एम. बोटादरा**

सागर - श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल ट्रस्ट, सागर द्वारा दिनांक 13 नवम्बर से 18 नवम्बर 2014 तक छहढ़ाला प्रवचन शिविर संपन्न हुआ। इस अवसर पर देवलाली से पधारे पण्डित श्री अभयकुमारजी शास्त्री के सुबह एवं शाम को प्रवचनों का लाभ मिला। प्रातःकाल गुरुदेवश्री के छहढ़ाला पर सीडी प्रवचन चलाये गये। सीडी प्रवचन में मुख्य बिन्दुओं की चर्चा समागत विद्वान द्वारा की गई। इस आयोजन से साधर्मियों को छहढ़ाला के आध्यात्मिक रहस्यों के साथ गुरूदेवश्री की विशिष्ट शैली का परिचय हुआ।

शिवपुरी -यहाँ दिनांक 19 नवम्बर से 23 नवम्बर तक छहढ़ाला प्रवचन शिविर का आयोजन हुआ। इस अवसर विशेष रूप गुरूदेवश्री के छहढ़ाला प्रवचन संचालित किये गये जिन पपर विशेष आमंत्रित विद्वान पण्डित रजनीभाई दोसी, हिम्मतनगर के विशिष्ट प्रवचन शैली से साधर्मियों को गुरूदेवश्री के द्वारा उद्घाटित रहस्यों का परिचय प्राप्त हुआ।

आरोन - यहाँ 26 नवम्बर से 30 नवम्बर 2014 तक छहढ़ाला प्रवचन का आयोजन पूर्ण भव्यता के साथ हुआ। इस अवसर पर प्रतिदिन गुरूदेवश्री के सीडी प्रवचन के पश्चात् ब्र. नन्हेभाई जैन सागर के मांगलिक प्रवचन का लाभ मिला। उपस्थित श्रोताओं ने प्रतिदिन गुरूदेवश्री के प्रवचनों का लाभ लेने की भावना व्यक्त की।

बेगमगंज- यहाँ 11 दिसंबर से 15 दिसंबर 2014 तक छहढ़ाला प्रवचन का आयोजन पूर्ण भव्यता के साथ हुआ। इस अवसर पर प्रतिदिन गुरूदेवश्री के सीडी प्रवचन के पश्चात् ब्र. नन्हेभाई जैन सागर के प्रतिदिन तीनों समय मांगलिक प्रवचन का लाभ मिला।

छहढ़ाला वर्ष के अन्तर्गत छहढ़ाला प्रवचन शिविर के आगामी आयोजन

वाशिम - 25 दिसम्बर से 31 दिसम्बर 2014 - पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जैन जबलपुर
मकरोनिया - 25 दिसम्बर से 31 दिसम्बर 2014 - पण्डित श्री मनीष शास्त्री, खतौली
उदयपुर - 25 दिसम्बर से 1 जनवरी 2015 - पण्डित अभिषेक शास्त्री, पालड़ी अहमदाबाद

अब कुरकुरे में माँस

हमारी संस्था पत्रिका एवं अन्य माध्यमों से आपको काफी समय से सूचित करती रहीं हैं कि बाजार में मिलने वाले खाद्य पदार्थों में छुपे तरीके से मांस मिलाया जा रहा है। अब तो नये कुरकुरे के पैकेट पर स्पष्ट रुप से लिखा हुआ कि इसमें चिकन मिलाया गया है। क्या आप अब नहीं चेतेंगे ....

हॉर्लिक्स में गेहूं का नामोनिशान नहीं

एजेंसियां

भोपाल. सप्लीमेंट फूड के विक्रेता खरीदारों को आकर्षित करने के लिए डिब्बे में कई तरह के पोषक तत्व होने का दावा करते हैं, लेकिन असल में उस उत्पाद में ये तत्व होते ही नहीं हैं. इससे खरीदार अनजाने में ठग लिए जाते हैं. इसका सबूत हाल ही में खाद्य एवं औषधि प्रशासन अमले द्वारा लिए गए हॉर्लिक्स के सैम्पल से मिलता है. हॉर्लिक्स के डिब्बे पर गेहूं का चित्र बना था, लेकिन जब खाद्य एवं औषधि प्रयोगशाला में इसकी जांच की गई, तो उसमें गेहूं का नामो-निशान भी नहीं मिला. इसे मिसब्रांडेड घोषित किया गया. अब जिला खाद्य सुरक्षा अधिकारी विक्रेता के विरुद्ध एडीएम कोर्ट में मामला पेश करने की तैयारी कर रहे हैं. खाद्य सुरक्षा अधिकारियों ने गौतम नगर स्थित एसके एजेंसी से वूमन हॉर्लिक्स का नमूना लिया था. यह महिलाओं के लिए सप्लीमेंट पदार्थ था, जिसके शक्तिवर्धक होने का दावा किया जा रहा था. डिब्बे के ऊपर गेहूं का चित्र बना था. लेकिन अंदर गेहूं के अंश नहीं थे.

दिन विशेष नूडल्स भी मिले मिसब्रांडेड

खाद्य सुरक्षा अधिकारियों द्वारा लिया गया हक्का नूडल का सैम्पल भी मिस ब्रांडेड मिला है. इसके पैकेट पर निर्माता का पूरा पता अंकित नहीं था. साथ ही 'बेस्ट बिफोर' तारीख भी अंग्रेजी के छोटे अक्षरों (स्माल लेटर्स) में लिखी थी, जबकि इसे अंग्रेजी के बड़े अक्षरों (कैपिटल लेटर्स) में लिखा जाना चाहिए.

क्या है नियम

नियमानुसार प्रोडक्ट की पैकिंग के ऊपर जिन तत्वों के होने का दावा किया जाता है, उनका उस प्रोडक्ट में होना जरूरी है. ऐसा नहीं होने पर प्रोडक्ट को मिस ब्रांडेड माना जाता है. खाद्य सुरक्षा एवं मानक अधिनियम के तहत खाद्य पदार्थ के मिस ब्रांडेड पाए जाने पर विक्रेता पर 5 लाख रुपए तक जुर्माने का प्रावधान है.

रेड चिली अचार तेल में खराबी

- पुराने शहर के कबाड़खाना क्षेत्र से लिया गया रेड चिली अचार अमानक मिला है.
- इसमें जिस तेल का प्रयोग किया गया था, वह ठीक नहीं था.
- ... अधिकारियों ने अचार का सैम्पल लेकर ईदगाह हिल्स स्थित प्रयोगशाला में जांच कराई थी, जिसमें इसे अमानक पाया गया है.

कुमार अरुण शर्मा

सप्लीमेंट जैसे हार्लिक्स, बूस्ट, बोर्नवीटा, नूडल्स आदि फूड की निर्माता कंपनी टीवी के चमकदार विज्ञापनों में अपने प्रोडक्ट्स में पोषक तत्वों के होने का वादा करती हैं। विज्ञापन में भी एक थका हुआ बच्चा इन्हें खाते ही शक्तिमान बन जाता है। इन लुभावने विज्ञापनों के मायाजाल में फंसकर उसे खरीदकर अपने बच्चों को पिलाते हैं और बहुत संतुष्टि का अनुभव करते हैं कि हमारे बच्चों को पोष्टिक आहार मिल रहा है। परन्तु शायद आप नहीं जानते कि डिब्बे में लिखे हुये तत्व उनमें होते ही नहीं हैं। कुछ समय पूर्व ही खाद्य एवं औषधि प्रशासन ने कुछ सप्लीमेंट फूड्स के सेम्पल की जांच प्रयोगशाला में करवाई तो उसमें पोषक तत्वों का अंश भी नहीं मिला। हार्लिक्स के डिब्बे में गेहूँ का के निशान थे परन्तु परीक्षण में गेहूँ का अंश भी नहीं मिला।

इसी तरह नूडल्स, बोर्नवीटा आदि में पोषक तत्व नहीं पाये गये। एक गोपनीय रिपोट के अनुसार बोर्नवीटा में मूंगफली के छिलकों का प्रयोग किया जाता है जिसे हम कचरा समझकर फेंक देते हैं। बाजार के अचार का परीक्षण करने पर उसमें मिलाया जाने वाला तेल अच्छी क्वालिटी का नहीं है।

सत्य आपके समक्ष है और निर्णय आपके हाथों में ....

जिन शासन के राजदुलारे

- विराग शास्त्री

जिनशासन के राजदुलारे,
हम बच्चे हैं प्यारे-प्यारे ।।
सुबह को जल्दी उठते हैं,
णमोकार फिर जपते हैं ।।
जिनमंदिर नित जाते हैं,
प्रभु की महिमा गाते हैं ।।
अच्छी बातें करते हैं,
झूठ कभी न कहते हैं ।।
पानी छान के पीते हैं,
बाजार में कुछ न खाते हैं ।।
सदा प्रभु की वाणी सुनते,
इसीलिये मुस्काते हैं ।।

प्यारी मम्मी

मेरी मम्मी सबसे अच्छी,
मंगल गीत सुनाती है।
फिर चावल की डिब्बी देकर,
जिनमंदिर पहुँचाती है।
दर्शन की महिमा बतलाकर,
पूजन पाठ सिखाती है।
सोते-उठते जाते-आते,
जय जिनेन्द्र करवाती है।
भोजन-व्यंजन शुद्ध बनाती,
अभक्ष्य से हमें बचाती है।
जिनशासन की कथा सुनाकर,
हमको रोज सुलाती है।

बाल गीत

ब्र. रवीन्द्रजी आत्मन्

भावना

सप्त व्यसन से दूर रहेंगे, अभक्ष्य वस्तु का त्याग करेंगे।
रात्रि भोजन नहीं करेंगे, अयोग्य भोजन नहीं करेंगे।
पानी छना काम में लेंगे,सरल सत्य व्यवहार करेंगे।
सब जीवों से प्रेम करेंगे, गुणी जनों की विनय करेंगे।
सेवा वैयावृत्ति करेंगे, उनके सदगुण ग्रहण करेंगे।
दुखियों पर हम दया करेंगे, दुर्जन में माध्यस्थ रहेंगे।
निज-पर भेद विज्ञान करेंगे, द्रव्यदृष्टि हम नित्य रखेंगे।
आत्म साधना सदा करेंगे, धर्म प्रभावना सदा करेंगे।।

भोजन

पहले दर्शन बाद में भोजन।
पहले पूजन बाद में भोजन।
पहले स्वाध्याय बाद में भोजन।
पहले दान बाद में भोजन।
संयम सहित करें हम भोजन।
तप वृद्धि करने को भोजन।
आसक्ति तज करें सु भोजन।
रहकर मौन करें हम भोजन।
द्रव्य शुद्ध हो क्षेत्र शुद्ध हो।
काल शुद्ध हो भाव शुद्ध हो।
शुद्धि सहित हम करें हम भोजन।
शान्त चित्त हों करें सु भोजन।
नहीं हमारा ये जड़ भोजन।
करें ज्ञानमय नित ही भोजन।

जिनवाणी की अनसुनी करने वालों की कर्म भी नहीं सुनेगा।

जन्मदिवस की शुभकामनायें

जन्म-मरण से रहित अजन्मे, जन्म-दिवस का क्या अभिनन्दन।
पल-पल जी चैतन्य प्राण से, तू तो शाश्वत ध्रुव चेतन।।

'अर्हम्' अर्हम् ही जपो, हो जन्म मरण अवसान।
न्याय नीति और धर्म, पाओ नित सन्मान।।

अर्हम् अजमेरा, रतलाम 21 अक्टूबर

जिनवाणी अध्ययन करो, जीवन हो अभिराम।
सत्य, न्याय, करुणा धरो, सुखी रहो 'मेघांश'।।

मेघांश दीपक जैन, जयपुर 2 दिसम्बर

समिति पंच मुनिराज की, है 'एषणा' इक नाम।
दया समता करुणा धरो, जीवन बने महान।।

एषणा पी. जैन, सूरत 30 दिसम्बर

धर्म भाव सौरभ से सुरभित, जीवन के सोपान चढ़ो।
'अचिन्त्य' चिन्तवन करो सिद्ध का, अविनाशी शिव पंथ गहो।।

अचिन्त्य सौरभ जैन, इंदौर 7 जनवरी

आप भी अपने बच्चों के जन्मदिन पर मात्र 100/- रुपये की राशि देकर शुभकामनायें प्रकाशित करायें ।
E-mail : kahansandesh@gmail.com

कोई लाख करे चतुराई
करम का लेख
मिटे न रे भाई

इन्हें देखकर आप आश्चर्य कर रहे होंगे। भाई ये सब अपने आत्म स्वभाव को भूलकर दूसरों के अपमान का फल है। हम भी ऐसी कितनी पर्यायों में जन्म ले चुके हैं। इसलिये हे आत्मन् अब अपने को शरीर से रहित अनुभव करके अनंत सुख का पुरुषार्थ करो। मनुष्य पर्याय में जन्मा यह जीव

जन्म लेकर मरण को प्राप्त एक दिन का बालक। मनुष्य पर्याय मिली और व्यर्थ हो गई।

नव विवाहित युगलो को मंगल शुभकामनाये

नागपुर के श्रेष्ठी श्रीमान् नरेश - शकुनजी सिंघई के सुपुत्र श्री निकुन्ज का शुभ विवाह कटनी निवासी श्रेष्ठी श्री सुधीरजी जैन सुभाष ट्रांसपोर्ट की सुपुत्री डॉ. शिवि साथ दिनांक 16 नवम्बर को नागपुर में संपन्न हुआ। ज्ञातव्य है कि नवयुगल को नागपुर में 1 जनवरी 2015 से होनेवाले पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव में सौधर्म इन्द्र - शची इन्द्राणी का सौभाग्यशाली पद प्राप्त हुआ है।

मलाड मुम्बई निवासी श्री रमेशचंद मेहता के सुपुत्र श्री दर्शन मेहता का शुभ विवाह सूरत निवासी श्री प्रफुल्लभाई की सुपुत्री सौ. शिवानी के संग दिनांक 28 नवम्बर 2014 को संपन्न ।

दिनांक 12 दिसम्बर को मोरबी निवासी विद्वान श्री इन्दुभाई संघवी के पौत्री एवं श्री निखिलभाई की पुत्री सौ. सुविनि का शुभ विवाह अहमदाबाद निवासी श्री हर्षदभाई के सुपुत्र श्री सिद्धार्थ के साथ दिगम्बर विधि विधान से संपन्न हुआ।

संस्था परिवार नवविवाहित युगलों के सफल, धार्मिक जीवन की मंगल कामना करता है।

दिनांक 6 दिसंबर 2014 को करेली निवासी पं. श्री कपूरचंद जी की सुपौत्री एवं श्री मुकेश जैन की सुपुत्री सौ.कां. अनुभूति का शुभ विवाह तीर्थधाम मंगलायतन के निर्देशक पं. श्री अशोक कुमार लुहाड़िया के सुपुत्र चि. सौधर्म के साथ अत्यंत गरिमामय वातावरण में सम्पन्न हुआ ।

अवश्य पधारिये

मंगल आमंत्रण

आचार्य कुन्दकुन्द की तपोभूमि पोन्नूरमलै में अष्टान्हिका महापर्व पर

श्री पंचमेरु - नंदीश्वर मंडल विधान एवं आध्यात्मिक शिविर

गुरुवार, 26 फरवरी से गुरुवार, 5 मार्च 2015 तक

आमंत्रित विद्वान – पण्डित श्री अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली द्वारा कारणशुद्धपर्याय पण्डित श्री चेतनभाई मेहता राजकोट द्वारा समयसार की 14-15वीं गाथा पर कक्षा का लाभ प्राप्त होगा।

निर्देशन - श्री विराग शास्त्री जबलपुर

पोन्नूर में सीमित संसाधनों के कारण आवास एवं भोजन की व्यवस्था सीमित है। कार्यक्रम की सपलता की दृष्टि से रजिस्ट्रेशन करवाना अनिवार्य है। इस कार्यक्रम में पधारने के इच्छुक साधर्मी 9300642434 विराग शास्त्री पर संपर्क करके रजिस्ट्रेशन नम्बर प्राप्त कर लें। पोन्नूर के मार्ग सम्बन्धी जानकारी के लिये 04183-291136, 225033 पर संपर्क करें। चेन्नई से पोन्नूर तक के लिये सरकारी बस सेवा उपलब्ध है।

आयोजक : श्री कुन्कुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, विले पारले, मुम्बई

जिनवाणी की सुरक्षा के उपाय : निबंध प्रतियोगिता

आज पूरे देश के अनेक छोटी-बड़ी संस्थाओं द्वारा अनेक प्रकार का साहित्य का प्रकाशन हो रहा है साथ ही अनेक पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन किया जा रहा है। कई घरों में उपलब्ध साहित्य समयानुसार जीर्ण-शीर्ण हो गया है तथा पत्र-पत्रिकायें जिनवाणी का अंश होने से विनय के योग्य हैं। निरन्तर गंभीर हो रही इस समस्या के समाधान के प्रथम प्रयास के रूप में इसके उपाय जानने की भावना से अखिल भारतीय स्तर पर एक निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। इस प्रतियोगिता का विषय है : **'जिनवाणी सुरक्षा के उपाय'** आप के लेख सादर आमंत्रित हैं। सर्वश्रेष्ठ निबन्धों निम्नानुसार पुरस्कार प्रदान किये जायेंगे।

प्रथम पुरस्कार - 7100/- रु. द्वितीय पुरस्कार - 5100/- रु.
तृतीय पुरस्कार - 3100/- रु. सांत्वना पुरस्कार - 1100/- रु.(11 पुरस्कार)

- सभी प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र दिया जायेगा। - लेख पेज के एक ही ओर स्पष्ट लिखावट में अथवा टाइप किया हुआ होना चाहिये। - लेख कम से कम 1000 शब्दों में होना चाहिये। - श्रेष्ठ लेख अधिक होने की स्थिति में पुरस्कारों की संख्या बढ़ाई भी जा सकती है। - निर्णायकों का निर्णय अंतिम एवं सर्वमान्य होगा। - लेख भेजने की अंतिम तिथि 28 फरवरी 2015 है।

लेख भेजने का पता - संयोजक - विराग शास्त्री,
सर्वोदय, 702, जैन टेलीकॉम, फूटाताल, लाल स्कूल के पास,
जबलपुर 482002 म.प्र. मो. 9300642434 **Email : kahansandesh@gmail.com**

आयोजक : श्री कुन्कुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, विले पारले, मुम्बई